युवा जीवन

मार्च 2026

क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ्य को जगाना और उसे फैलाना चाहते हैं?

लापरवाह ना बने

प्रस्तावना

मेरे प्रिय नौजवान मित्रों,

यीशु मसीह के बहुमूल्य नाम में आपका अभिनन्दन।

आज के नौजवान योद्धा बनकर उभर रहे हैं — हिम्मत वाले, जोशीले, और परमेश्वर के लिए बड़े काम करने के लिए तैयार। फिर भी दूसरी तरफ, कुछ लोग लापरवाही की ओर बढ़ रहे हैं। उस बहाव में, वे वह उद्धार खोने लगते हैं जिसे वे कभी संजोते थे, पवित्रता भूल जाते हैं, अपने अभिषेक और बुलावे को नज़रअंदाज़ करते हैं, और धीरे-धीरे अपने भीतर मौजूद वरदानों और सामर्थ को दबा देते हैं। मज़बूती से खड़े रहने के बजाय, वे समझौते और चुप्पी के कोनों में चले जाते हैं।

इसीलिए पौलुस तीमुथियुस नाम के एक नौजवान को अत्यावश्यकता और स्पष्टता से लिखते हैं:

"अपने भीतर जो वरदान है, उसे तुच्छ न जान। इसके बजाय, एक आदर्श बन जा। सचेत रहो। सावधान रहो।" वह उसे महत्वपूर्ण हिदायतों के साथ चुनौती देता है:

"कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।

उपदेश देने और सिखाने में परिश्रमी बनो।

अपने जीवन और अपने सिद्धांत को ध्यान से देखें।

पौलुस तीमुथियुस को भरोसा दिलाता है कि अगर वह इस तरह जीएगा, तो वह न सिर्फ़ अपनी ज़िंदगी बचाएगा, बल्कि जो लोग उसकी बात सुनेंगे उन पर भी प्रभाव डालेगा और उन्हें ऊँचा उठाएगा।

मेरे प्रिय नौजवानों, *एक ही चीज़ है जिससे तुम्हें बचना चाहिए । और केवल तीन चीज़ें हैं जिन्हें तुम्हें अपनाना चाहिए। जब तुम यह रास्ता चुनते हो, तो परमेश्वर तुममे नई सामर्थ देकर और तुम्हारे जीवन के ज़रिए बहुत सारी आत्माओं को लाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।*

आपका भाई,

Nathan C L.

बाइबल खोज

हेलो मित्रों!

पिछले महीने, हमने उत्पत्ति की पुस्तक की पृष्ठभूमि का पता लगाया। हमारा मानना है कि इससे आपकी बाइबल पढ़ने की यात्रा को मज़बूती मिली और आपको परमेश्वर की कहानी की बड़ी तस्वीर देखने में मदद मिली। इस महीने और गहराई में जाने के लिए तैयार हैं? आइए बाइबल की अगली चार ताकतवर किताबों को खोलते हैं और जानते हैं कि वे परमेश्वर के बारे में — और हमारे बारे में क्या बताती हैं।

निर्गमन – गुलामी से मुक्ति तक

निर्गमन की पुस्तक एक ऐसे परमेश्वर की कहानी है जो ज़ुल्म को नज़रअंदाज़ करने से मना कर देता है। 400 साल की गुलामी के बाद, परमेश्वर मूसा को एक उद्धारक के तौर पर खड़ा करते हैं। मिस्र पर विपत्तियाँ आती हैं। फिरौन का हृदय कठोर हो जाता है। और फिर — लाल सागर दो हिस्सों में बँट जाता है। जो नामुमकिन लगता था वह आज़ादी का राजमार्ग बन जाता है।

निर्गमन हमें याद दिलाता है कि जब परमेश्वर आगे आते हैं तो कोई भी बंधन बहुत मज़बूत नहीं होता।

नियम और वाचा (निर्गमन 19–20)

दस आज्ञाएँ प्रेम की शर्त के तौर पर नहीं दी गई थीं। परमेश्वर ने यह नहीं कहा, "पहले मेरी बात मानो, फिर मैं तुमसे प्रेम करूँगा।" उसने कहा, "मैंने तुम्हें पहले ही छुड़ा लिया है — अब अलग तरह से जियो।"

आज्ञाकारिता उद्धार पाने का तरीका नहीं है। यह उसकी प्रतिक्रिया है।

लेव्य-व्यवस्था – आराधना और पवित्रता

लेव्य-व्यवस्था पढ़ने में मुश्किल लग सकता है, लेकिन इसका सन्देश बिलकुल स्पष्ट है:

1. जिस परमेश्वर की हम उपासना करते हैं, वह पवित्र है।
2. पाप के परिणाम होते हैं — लेकिन माफ़ी मुमकिन है।
3. बलिदानों ने टूटे हुए लोगों के लिए पवित्र परमेश्वर के पास जाने का ।

हर भेंट ने इज़राइल को याद दिलाया कि अनुग्रह आवश्यक है और बहाली उपलब्ध है। पवित्रता प्रतिबंध के विषय में नहीं; यह सम्बन्ध के विषय में थी।

गिनती – निर्जन प्रदेश से सबक

इज़राइलियों ने उसी परमेश्वर पर अविश्वास किया जिसने उन्हें बचाया था। उन्होंने शिकायत की। उन्होंने बलवा किया। वे अपने दुश्मनों से डरते थे।

एक सफ़र जो 14 दिन (लगभग 320 km) का हो सकता था, वह 40 साल तक खिंच गया। क्यों? क्योंकि अविश्वास नियति में देर करता है।

निर्जन प्रदेश सिर्फ़ एक स्थान नहीं था — यह एक परिणाम था।

व्यवस्था-विवरण – याद रखें कि आप कौन हैं

प्रतिज्ञा के देश में जाने से पहले, मूसा ने लोगों को तीन पक्की सच्चाईयाँ याद दिलाईं:

1. परमेश्वर को कभी मत भूलना।
2. उनसे कभी मुँह मत मोड़ो।
3. जीवन चुनो। पवित्रता चुनो।

यादें नियति बनाती हैं। जब हम भूल जाते हैं कि हमें किसने बचाया, तो हम भूल जाते हैं कि हम कौन हैं।

इसे याद रखो।

- परमेश्वर अन्याय देखते हैं और प्रतिउत्तर देते हैं।
- उद्धार अनुग्रह से मुफ्त में मिलता है — लेकिन उद्धार में बढ़ना जीवन भर का सफ़र है।
- परमेश्वर की आज्ञाएँ ज़ंजीरें नहीं हैं; वे सुरक्षा हैं।
- शिकायत करना और लगातार अविश्वास करना हमें निर्जन भूमि की अवस्था में फँसा सकता है।
- परमेश्वर के सन्मुख विनम्रता परिवर्तन की शुरुआत है।
- अगर हम उद्धार चाहते हैं लेकिन किसी के द्वारा आकार दिए जाने का विरोध करें, तो हम उनके वायदे की परिपूर्णता तक नहीं पहुँच सकते।

इस महीने, सिर्फ़ बाइबल न पढ़ें — उसका अनुभव करें। हर पन्ना आपको याद दिलाए कि जिस परमेश्वर ने इज़राइल को छुटकारा दिलाया, वह आज भी उद्धार की कहानियाँ लिख रहा है।

दृष्टि से परे विजय

आज, हम थूथुकुडी ज़िले के एक छोटे से गाँव की एक जवान लड़की माइकल विसिया के प्रेरणादायक सफ़र पर नज़र डालने जा रहे हैं — वह जन्म से ही देखने में दिक्कत महसूस करती थी, 10वीं क्लास में उसे एक अजीब बीमारी हो गई, फिर भी उसने हर बाधा को पार कर, कक्षा 10वीं, 11वीं और 12वीं में विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया और अब आत्मविश्वास और हिम्मत के साथ अपनी कॉलेज की पढ़ाई कर रही है।

"हमें अपने और अपने बचपन के बारे में बताइए..."

मैं थूथुकुडी ज़िले के वेम्बाडू गाँव से हूँ। मैं अभी कॉलेज के अपने पहले साल में पढ़ रही हूँ। मैं जन्म से ही देखने में दिक्कत महसूस करती थी।

हालाँकि मैं एक मसीही परिवार में पैदा हुई थी, लेकिन कई सालों तक मैंने यीशु को ठीक से जाने बिना अपना जीवन जिया।

जब मैंने देखने में दिक्कत वाले छात्रों के लिए एक स्पेशल स्कूल जॉइन किया (ग्रेड 9 से 12 तक), तभी मुझे धीरे-धीरे यीशु और उनके किए गए चमत्कारों के बारे में पता चला।

"तो, क्या आपने अपने जीवन के शुरुआती दिनों में ही मसीह को स्वीकार कर लिया था?"

भले ही मैं एक मसीही परिवार में पली बढ़ी, लेकिन स्पेशल स्कूल में जाने के बाद ही मुझे सच में समझ आया कि यीशु कौन हैं। उससे पहले, मैं बस यही मानती थी कि यीशु ही वो ईश्वर हैं जिनकी पूजा मेरा परिवार करता है, और बाइबिल हमारी पवित्र किताब है। बस इतना ही। लेकिन जब मेरे शिक्षको ने यीशु के बारे में सन्देश बांटना शुरू किया — जब मैंने चर्च में उपदेश सुनना, गवाही सुनना, धर्मग्रंथ समझना शुरू किया — तो मेरे भीतर जिज्ञासा जगी। "इसने अचंभे में डाल दिया। पहली बार, विश्वास असली लगा।

"आपका चर्च का अनुभव कैसा था?"

सच कहूँ तो? मुझे चर्च जाना पसंद नहीं था। मुझे बाइबिल ले जाने में शर्म आती थी। मुझे डर था कि दूसरे बच्चे मेरा मज़ाक उड़ाएँगे। लेकिन मेरी माँ ज़ोर देती थीं कि मैं इसे साथ ले जाऊँ। इसलिए मैं जाती थी — उत्साह से नहीं, बल्कि ड्यूटी समझ के।

"जब आयतें पढ़ी जाती थीं, तब भी मैं बस बाइबल खोलकर रख देती थी। मैं उसे वास्तव में पढ़ती नहीं थी। न ही मैं सच में सुनती थी। मैं शारीरिक रूप से तो वहाँ मौजूद होती — पर आध्यात्मिक रूप से अनुपस्थित।"

"तो फिर आप यीशु को सच में कैसे जान पाए?"

स्पेशल स्कूल में आने के बाद, मुझे समझ आने लगा कि बाइबिल सिर्फ़ कागज़ की किताब नहीं है — इसका हर शब्द हमारे लिए परमेश्वर का जीवित सन्देश है। मैंने सीखा कि यीशु हमारे लिए इस धरती पर पैदा हुए, हमारे पाप और श्राप अपने ऊपर लिए, क्रूस पर मरे, शैतान को हराया, मौत की ज़ंजीरें तोड़ी, और तीसरे दिन फिर से जी उठे।

और वह ज़िंदा हैं — आज भी। इस एहसास ने मुझे बहुत ज़्यादा हिला दिया। यह अविश्वसनीय लगा — फिर भी बहुत असरदार था।

"इसके बाद आपके जीवन में क्या बदलाव आए?"

10वीं क्लास में पढ़ते समय, अचानक मुझे बहुत ज़्यादा बेहोशी के दौरे पड़ने लगे। बिना किसी चेतावनी के, मैं गिर जाती। मेरा शरीर ठंडा हो जाता। मैं दो या तीन दिन तक बेहोश रहती।

डॉक्टरों ने बार-बार मेरी जांच की — स्कैन, टेस्ट, कई परामर्श। हर रिपोर्ट में एक ही बात थी:

"कोई प्रॉब्लम नहीं है।" फिर भी बेहोशी कभी बंद नहीं हुई। मुझे दिन में आठ टैबलेट दिए गए। पूरे एक साल तक, मैंने लगातार दवाईयां खाईं। दुष्प्रभाव बढ़ गए हैं। मेरी पढ़ाई पर असर पड़ा। लेकिन हालत वैसी ही रही। मेरे मम्मी-पापा रोज़ मेरे लिए रोते और प्रार्थना करते थे।

"परिस्थितियां कब बदलीं? क्या तुम अपने एग्जाम दे पाए?"

मेरे 10th के पब्लिक एग्जाम से एक महीने पहले, मैं फिर से बेहोश हो गई। मुझे डर लगने लगा। मुझे नहीं पता था कि मैंने क्या पढ़ा है। मुझे नहीं पता था कि मैं कितनी तैयार थी। क्या होगा अगर मैं परीक्षा के दौरान बेहोश हो जाऊँगी? मैंने स्कूल जाना बंद कर दिया। एक दिन, घर पर अपने फ़ोन पर स्क्रॉल करते हुए, मुझे एक 'अचीवर्स मीटिंग' के वीडियो मिले — वे स्टूडेंट्स जो बीमारी के बावजूद सफल हुए थे, अपनी कहानी बाँट रहे थे।

मेरे अंदर उम्मीद फिर से जाग उठी। उस रात, मैं घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगी। मेरा हृदय भारी था। मुझे नहीं पता था कि प्रार्थना कैसे करनी है। मैं बस रोयी। आखिर में, मैंने तीन बातें फुसफुसाईं: "मुझे माफ़ करना, यीशु। मुझे डर लग रहा है। प्लीज़ मेरी मदद करो।" और मैं सो गई।

अगली सुबह, कुछ बदल गया था। मेरा हृदय हल्का महसूस हुआ। मेरे अंदर हिम्मत जाग गई। आत्मविश्वास लौट आया। मैं सुबह जल्दी उठी, अपनी बाइबल पढ़ी, हर पुस्तक पर हाथ रखकर प्रार्थना की, और स्कूल भागी। मैंने प्रार्थना की, "यीशु, मेरे साथ पढ़ो। मेरे साथ रहो। मेरे साथ परीक्षा लिखो।"

जब रिज़ल्ट आया — मेरे 500 में से 478 नंबर आए। मैंने पूरे स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया । यह पूर्ण अनुग्रह था।

"क्या आपने उसके बाद भी उत्कृष्टता बनाए रखी?

11वीं क्लास में, शुरू में सब ठीक चल रहा था। लेकिन धीरे-धीरे, मेरा आत्मिक अनुशासन कमज़ोर होता गया। मैंने प्रार्थना टाल दी। मैंने बाइबल पढ़ने में देर कर दी। मैं कहती, "कल।" आखिरकार, कल कभी नहीं आया।

जल्द ही, बेहोशी वापस आ गई — इस बार और ज़्यादा। मुझे बार-बार हॉस्पिटल में भर्ती होना पड़ा।

26 जनवरी, 2024 को, जब अचीवर्स मीटिंग हो रही थी, मैं हॉस्पिटल में थी।

जब मेरे स्कूल के मित्रों ने मीटिंग में जो हुआ, उसे बताया, तो मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। आँसुओं के साथ, मैं यीशु के पास लौट आई। "मुझे माफ़ कर दो। मैं फिर से दूर नहीं जाऊँगी। मुझे अपनी प्यारी बेटी बना लो। मेरे माता-पिता मेरी वजह से दुखी हैं। मुझे ठीक कर दो। अगले साल, मैं अचीवर्स मीटिंग में गवाही दूँगी।" यीशु ने मुझे माफ़ कर दिया। उसने मुझे ठीक कर दिया।

11वीं क्लास में, मैंने अच्छे नंबर हासिल किए। 600 में से 538, एक बार फिर मैंने पूरे स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

और अगले 26 जनवरी को, मैं उस स्टेज पर खडी हुई और अपनी बात शेयर की — ठीक वैसे ही जैसे मैंने प्रार्थना की थी।

"वीं कक्षा के बारे में क्या?"

12वीं कक्षा में, मैंने बिना किसी हेल्थ प्रॉब्लम के अपनी परीक्षा दिए और 600 में से 547 नंबर लाए, एक बार फिर अपने स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आज, मैं एक अच्छे कॉलेज में उच्च शिक्षा ले रही हूँ। उस दिन से लेकर अब तक, मुझे कोई शारीरिक समस्या नहीं हुई है। जिस परमेश्वर ने मेरे पाप माफ किए, मेरी बीमारी ठीक की, मुझे कमजोरी से निकाला, और मुझे बेहतरीन होने का ताज पहनाया। वह मुझे वफादार रहने का अनुग्रह देता रहता है। सारी महिमा सिर्फ परमेश्वर को मिले!

प्रिय नौजवानों, यह सिर्फ पढ़ाई में सफलता की कहानी नहीं है। यह कमजोरी के ताकत में बदलने की कहानी है। डर के विश्वास में बदलने की। बीमारी के जीत का ताज पहनने की।

क्योंकि जब परमेश्वर आगे आते हैं, तो दबाव मकसद बन जाता है, दर्द तैयारी बन जाता है, और मुश्किलें गवाही बन जाती हैं।

आज से परे देखने की ताकत

प्रिय युवा विजेताओं, आपके काबलियत पर पूर्ण विश्वास के साथ आपका हार्दिक अभिवादन! सफलता उस पल नहीं मिलती जब आप तय करते हैं कि आप इसे चाहते हैं। यह अगले दिन नहीं दिखती। सफलता के लिए कोशिश, तेज़ फोकस और सबसे ज़रूरी, नाकामी से लड़ने की हिम्मत चाहिए। सिर्फ़ वही लोग जो संघर्ष करने, सीखने और डटे रहने को तैयार हैं, जीत नाम के लक्ष्य को सही-सही मार सकते हैं।

आइए पीयूष बंसल के सफ़र पर नज़र डालते हैं, एक ऐसे इंसान जिन्होंने लंबे समय के विज़न को हमेशा चलने वाली सफलता में बदल दिया। 1985 में नई दिल्ली में जन्मे पीयूष ने कनाडा में मैकगिल यूनिवर्सिटी से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में अपनी उच्च शिक्षा पूरी की और बाद में यूनाइटेड स्टेट्स में माइक्रोसॉफ्ट में एक अच्छी, ज़्यादा तनख्वाह वाली नौकरी हासिल की। बाहर से देखने पर, ऐसा लगता था कि उनके पास सब कुछ है। लेकिन अंदर से, वह संतुष्ट नहीं थे क्योंकि उनका सपना आरामदायक तनख्वाह से बड़ा था। वह सिर्फ़ एक कंपनी के लिए काम नहीं करना चाहते थे — वह एक कंपनी बनाना चाहते थे।

गहरी सोच के बाद, उन्होंने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने अपनी पक्की नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया और उद्यमशीलता के लिए भारत लौट आए। कई लोगों ने उनके फैसले का विरोध किया और उनके जोखिम लेने पर सवाल उठाए, लेकिन उन्होंने दूसरों के शक के लिए अपनी सोच को कमजोर नहीं होने दिया। भारत में, उन्होंने सर्चमायकैंपस(SearchMyCampus), फ्ल्यर्र(Flyrr) और वाचकार्ट(Watchkart) जैसे व्यापार शुरू किए। बदकिस्मती से, वे असफल हो गए। उन्हें तुरंत सफलता नहीं मिली। फिर भी, हार मानने के बजाय, उन्होंने नाकामी को तैयारी माना।

2010 में, उन्होंने हर भारतीय के लिए आंखों की देखभाल को सस्ता और आसान बनाने के मिशन के साथ लेंसकार्ट(Lenskart) शुरू किया। उस समय, लोग ऑनलाइन चश्मे खरीदने में झिझकते थे। हार मानने के बजाय, उन्होंने ट्राई एट होम" Try at Home" और होम ऑय चेक अप"Home Eye Check-up" जैसी सर्विस शुरू करके कुछ नया किया, जिससे भरोसा बना और कस्टमर आकर्षित हुए। धीरे-धीरे, कंपनी बढ़ी। आज, लेंसकार्ट(Lenskart) के भारत और विदेश में हजारों स्टोर हैं, जो आईवियर(चश्मे) इंडस्ट्री को बदल रहे हैं और लाखों लोगों की ज़िंदगी पर असर डाल रहे हैं।

मित्रों, पीयूष ने अपना सपना एक दिन या एक साल में भी पूरा नहीं किया। उनकी शुरुआती कोशिशें फेल हो गईं, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। यही फर्क होता है सपने देखने वालों और पाने वालों में। सफलता शायद जल्दी न मिले, लेकिन यह हमेशा उन्हीं को मिलती है जो हार नहीं मानते। कोशिश करते रहो। और मेहनत करो। फोकस रखो। तुम्हारी कोशिश कभी बेकार नहीं जाएगी। जीत में समय लग सकता है, लेकिन जो लगातार कोशिश करता है, उसके लिए यह अटल है...!

लापरवाह ना बनें

आज की तेज़ रफ़्तार दुनिया में, युवा लोग हर तरफ़ से लगातार दबाव झेल रहे हैं – एकेडमिक्स, करियर, सेवकाई, सोशल मीडिया, टेक्नोलॉजी... लिस्ट कभी खत्म नहीं होती। सतर्क रहना अब वैकल्पिक नहीं रहा; यह ज़रूरी है।

लेकिन जब हम इस सोच में पड़ जाते हैं कि "मैं यह कल करूँगा" या "मेरे पास अभी टाइम नहीं है", तो हम चुपचाप उस सफलता को दूर कर देते हैं जिसके लिए हम दुआ कर रहे होते हैं। लापरवाही सिर्फ़ आलस नहीं है। यह भटकाव है। यह गैर-ज़िम्मेदारी है। यह आपके भविष्य को अनदेखी करना है।

जब आप अपनी पढ़ाई पर ध्यान करने के बजाय टाइम बर्बाद करते हैं, तो आप सिर्फ़ अंक ही नहीं खो रहे होते—आप अपनी लक्ष्य को दूर कर रहे होते हैं। उन लोगों को देखिए जो ज़िंदगी में सच में सफल हुए हैं। वे इसलिए नहीं विजयी हुए क्योंकि ज़िंदगी आसान थी। उन्हें भी हार का सामना करना पड़ा। उन्हें आलोचना का सामना करना पड़ा। उन्हें थकान का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने टाइम का समझदारी से इस्तेमाल किया, अपने मौकों को हिम्मत से पकड़ा, और उन ऊंचाइयों तक पहुँचे जिनके बारे में दूसरे सिर्फ़ सपने देखते थे।

उदाहरण के लिए, एम.एस. धोनी को ही ले लीजिए। दुनिया उन्हें भारत के सबसे अच्छे कप्तानों में से एक मानती है। जबकि वह एक साधारण पृष्ठभूमि से थे और रेलवे टिकट कलेक्टर के तौर पर काम करते थे। वह समझौता कर सकते थे। वह अपने सपने को लेकर लापरवाह हो सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। दिन-ब-दिन, उन्होंने ट्रेनिंग की। मैच-दर-मैच—यहां तक कि जब उनकी आलोचना हुई—तब भी वह केंद्रित रहे। उनके अनुशासन ने उन्हें सिर्फ एक महान खिलाड़ी ही नहीं बनाया; बल्कि इससे वह इंडियन क्रिकेट टीम के कप्तान बने और ऐतिहासिक जीत हासिल कीं।

बाइबल कहती है, "आलसी की भूख कभी नहीं मरती" (नीतिवचन 19:15)। जब हम लापरवाही से जीते हैं, तो मौके हमारे हाथ से निकल जाते हैं। खासकर हमारी जवानी में, यह आध्यात्मिक और व्यावहारिक रूप से सतर्क रहने का समय है— परमेश्वर की तैयार की हुई कृपा पाने का।

शिमसोन को देखिए। इज़राइल की अगुवाई करने के लिए परमेश्वर द्वारा चुना और अभिषिक्त किया गया, उसमें अविश्वसनीय ताकत और एक सामर्थी बुलाहट था। लेकिन उसने परमेश्वर की चेतावनियों को नज़रअंदाज़ कर दिया। उसकी लापरवाही ने उसे पाप में धकेल दिया, और उसने सब कुछ खो दिया—यहां तक कि अपनी आंखों की रोशनी भी।

जिसे नेतृत्व करना था, वह अपने दुश्मनों के लिए एक तमाशा बन गया। अभिषेक था। बुलाहट था। लेकिन लापरवाही ने उसे खत्म कर दिया। अब यूसुफ को देखो। उसके भाइयों ने उसे धोखा दिया। गुलाम की तरह बेच दिया गया। झूठा इल्ज़ाम लगाया गया। जेल में डाल दिया गया। फिर भी वह अपने विश्वास या ज़िम्मेदारियों को लेकर कभी लापरवाह नहीं हुआ। दर्द में भी, वह अनुशासन में रहा। निराशा में भी, वह परमेश्वर का वफ़ादार रहा। इसी लगन ने उसे गुलाम से मिस्र का प्रधान मंत्री बना दिया। दूसरों ने जो बुरे के लिए किया, परमेश्वर ने उसे तरक्की में बदल दिया—क्योंकि यूसुफ वफ़ादार रहा।

युवा लोगों, यह सुनो: अगर तुम प्रार्थना, विश्वास, पवित्रता में लापरवाह हो जाते हो, तो तुम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना में देरी करने का खतरा लेते हो। लेकिन अगर तुम प्रार्थना, सब्र और लगन से—स्थिर रहते हो—तो तुम्हारी दिशा बदल जाएगी। तुम्हारी कहानी बदल जाएगी।

इस समय तुम चाहे किसी भी मुश्किल का सामना कर रहे हो, घबराओ मत। भटको मत। अलग मत हो।

चेतन्य रहो। अनुशासन में रहो। आत्मिक तौर से जागृत रहो...!

जब परमेश्वर का तय समय आएगा, तो वह तुम्हें ऊपर उठाएगा।

इसलिए लापरवाह मत बनो। होश में जियो। समर्पित जियो। तैयार रहो...!

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 06/03/2026 और 31/05/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

Revival IGNITERS

संपर्क संख्या : +919750955548

YouTube Jesus Redeems - Hindi

Comforter DIGITAL CHANNEL www.comfortertv.com

युवा जागृति सभा

तारीख: 11 अप्रैल 2026

समय: सुबह 9:00 बजे - शाम 5:00 बजे

स्थान: पुणे

प्रवेश शुल्क: ₹100

वक्ता: ब्रो. अविनाश

आप यह कर सकते हैं!!

"जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" (फिलिप्पियों 4:13)

ब्राज़ील दुनिया के कुछ सबसे मशहूर फुटबॉल प्लेयर्स देने के लिए जाना जाता है। FIFA फुटबॉल में, जो लोग बेहतरीन उभरते हैं, वे ग्लोबल आइकॉन बन जाते हैं। उनमें से एक ब्राज़ील का युवा खिलाड़ी काका (रिकार्डो इज़ेकसन डॉस सैंटोस लेइट) था। उसका एक सपना था — सबसे ऊँचे स्तर पर खेलना और दुनिया के बेस्ट प्लेयर्स में से एक बनना।

उस सपने को पाने के लिए पूरे जोश के साथ ट्रेनिंग करते समय, एक दुखद घटना घटी। साल 2000 में, वह एक स्विमिंग पूल में फिसल गया, उसकी रीढ़ की हड्डी में गंभीर फ्रैक्चर हो गया, और वह बिस्तर पर पड़ गया। डॉक्टरों ने उससे साफ़-साफ़ कहा, "फिर से चलना भी मुश्किल होगा। फुटबॉल खेलना नामुमकिन है।" एक ऐसे युवा के लिए जिसका हृदय खेल के लिए धड़कता था, ये शब्द बहुत दुख देने वाले थे। उसका सपना टूट गया था।

फिर भी उसके अंदर कुछ था जो मरने को तैयार नहीं था। पक्के इरादे और विश्वास से मज़बूत होकर, उसने बहुत ज़्यादा इलाज और पुनर्वास(रिहैबिलिटेशन) करवाया। एक साल के अंदर, वह मैदान पर वापस आ गया। दुनिया हैरानी से देख रही थी। उसने लगातार ट्रेनिंग की। 2007 में, उसने ग्लोबल FIFA स्टेज पर हिस्सा लिया और बेस्ट प्लेयर का अवॉर्ड जीता। जब उससे पूछा गया कि उसने इतनी अच्छी वापसी कैसे की, तो उसका जवाब आसान लेकिन दमदार था: "यीशु मसीह हमें उससे कहीं ज़्यादा देते हैं जितना हम मांगते हैं।" एक्सीडेंट के बाद, यीशु में उसका विश्वास पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत हो गया था।

मैं आपको बताता हूँ कि प्रभु आपको कैसे मज़बूत करेंगे और आपको एक कामयाब इंसान बनाएंगे:

वह डर दूर करेंगे!

"क्या मैं कामयाब हो पाऊँगा? क्या मैं अच्छे मार्क्स ला सकता हूँ? मेरे माता-पिता चाहते हैं कि मैं स्कूल में टॉप करूँ... क्या मैं सच में ऐसा कर सकता हूँ?"

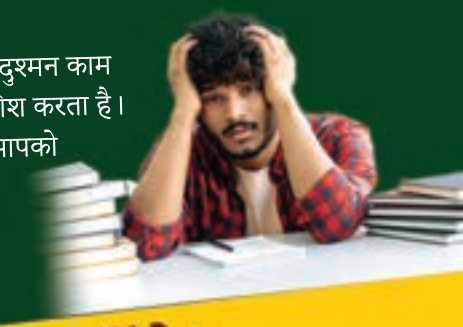

ये विचार डर पैदा करते हैं। और डर चुपचाप कोशिश को रोक देता है। उस डर के पीछे दुश्मन काम करता है, जो आपका कॉन्फिडेंस कमज़ोर करने और आपको जीत से भटकाने की कोशिश करता है। यीशु आपको एक कामयाब इंसान बनाना चाहते हैं, लेकिन दुश्मन डर पैदा करने और आपको खुद पर शक करने पर मजबूर करने की कोशिश करता है।

प्रभु कहते हैं, "मत डर, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ" (यशायाह 41:10)। वह आपको हियाव देते हैं: "दृढ़ हो जा। हिम्मत से लिखो। मैं तुम्हारे संग हूँ।" यीशु की मौजूदगी आपके हृदय को आत्मविश्वास और हियाव से भर देती है।

वह आपकी याददाश्त पुनः स्थापित करेंगे!

कई विद्यार्थी भूलने की बीमारी से जूझते हैं — "मैं पूरी रात पढ़ता हूँ, लेकिन सुबह तक सब कुछ भूल जाता हूँ।" प्रभु याददाश्त और स्पष्टता पुनःस्थापित कर सकते हैं।

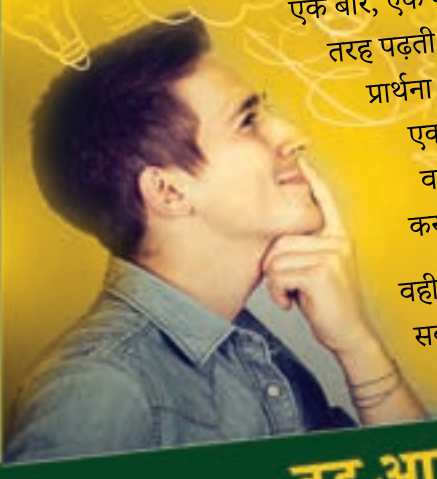

एक बार, एक माँ अपनी बेटी को प्रार्थना के लिए लाई। लड़की रोई और बोली, "मैं रात में अच्छी तरह पढ़ती हूँ, लेकिन सुबह तक सब कुछ भूल जाती हूँ।" मेरा हृदय उसके लिए टूट गया। हमने प्रार्थना की, परमेश्वर पर भरोसा करते हुए कि वह उसकी मदद करेंगे। कुछ दिनों बाद, वह एक चमकती हुई मुस्कान के साथ लौटी। "उस प्रार्थना के बाद, मैं जो कुछ भी पढ़ती हूँ वह मुझे याद रहता है। भूलना ख़त्म हो गया। मैंने अपनी परीक्षाएं सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर लीं!" उसने आनंद से कहा।

वही परमेश्वर आपकी याददाश्त को मज़बूत कर सकते हैं और आपके दिमाग को तेज़ कर सकते हैं।

वह आपको जीत दिलाएंगे!

"जय प्रभु से ही मिलती है" (नीतिवचन 21:31)। आप अच्छे अंक लाएंगे। आप सफल होंगे। और जिस जीत का आप जश्न मनाएंगे वह उन्हीं से आएगी। आपको बस विश्वास की ज़रूरत है। आज से, प्रभु के वायदे पर यकीन करें: "मैं तुम्हें ताकत दूंगा।" इस पर विश्वास करें। इसे अपनाएं। वह आपको ताकत देंगे और आपको एक कामयाब इंसान बनाएंगे।

प्रिय युवा मित्रों, पूरे भरोसे के साथ यह ऐलान करें:

"मैं अच्छी पढ़ाई करूंगा। मैं हिम्मत से अपने एग्जाम दूंगा। मैं अच्छे नंबर लाऊंगा। मैं उच्च शिक्षा लूंगा। अगर NEET जैसे कॉम्पिटिटिव एग्जाम भी आते हैं, तो मैं उनका हिम्मत से सामना करूंगा। मैं कामयाब हो सकता हूं। मैं डॉक्टर, इंजीनियर, साइंटिस्ट बनूंगा — यह भारत के लिए एक आशीष है। यीशु मुझे ताकत देंगे। वह मुझे आशीष देंगे!"

इस पर विश्वास करें। इसे जिएं। और आप ज़रूर आगे बढ़ेंगे और कामयाब होंगे।

तनावग्रस्त!!

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? यीशु मसीह के पवित्र नाम पर आप सभी को प्यार भरा अभिवादन!

मैं "तनावग्रस्त" शीर्षक वाली इस सीरीज़ के ज़रिए आपसे मिलकर बहुत उत्साहित हूँ। इस दुनिया में, हम लगातार मुश्किल हालात का सामना करते हैं। तनाव, डर, चिंता — कोई न कोई भार हमें दबाता रहता है। लेकिन असली सवाल यह है: जब हम तनाव में होते हैं तो हम कैसे प्रतिक्रिया देते हैं?

यह एक ज़बरदस्त सच है — तनाव में बनी कोई भी चीज़ कीमती हो जाती है।

चलिए कुछ आसान लेकिन गहरी बात के बारे में बात करते हैं: जैतून का तेल।

ठीक है, चलिए — शुरू करते हैं।

क्या आप जानते हैं कि जैतून का तेल कैसे बनता है?

सुनने में यह एक लम्बी प्रक्रिया लगती है, है ना? और यह कोई आम प्रक्रिया नहीं है — यह दबाव पर दबाव है। क्रश करना। पीसना। दबाना।ऑलिव ऑयल के होने के लिए, ऑलिव को धोना, कुचलना, तोड़ना, दबाना ज़रूरी है। यह कोई आसान सफ़र नहीं है — यह दर्दनाक है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि उस शुद्ध तेल का इस्तेमाल कहाँ होता है?

बाइबिल में एक ज़बरदस्त हिदायत है: "इस्राएलियों को हुक्म दो कि वे तुम्हारे लिए दबाए गए जैतून का साफ़ तेल रोशनी के लिए लाएं ताकि दीये लगातार जलते रहें... शाम से सुबह तक प्रभु के सामने।" (निर्गमन 27:20-21)

अब क्या आप समझते हैं, मिलो, जैतून को उस प्रक्रिया से क्यों गुज़रना पड़ा?

प्रभु की मौजूदगी में दीये को लगातार जलाए रखने के लिए उस कुचले हुए, दबाए हुए, शुद्ध तेल की ज़रूरत थी।

अगर एक साधारण जैतून को परमेश्वर के भवन में रोशनी की तरह चमकने के लिए इतना कुछ सहना पड़ता है, तो हमें – जिन्हें उनकी मौजूदगी में चमकने के लिए चुना गया है – कितना ज़्यादा सहना पड़ेगा?

हाँ, यह प्रक्रिया बहुत मुश्किल है। हाँ, यह कुचलने वाला लगता है। लेकिन दबाव आपको डुबोने के लिए नहीं होता – यह आपको तैयार करने के लिए होता है। जैसे जैतून को इस्तेमाल करने से पहले धोया जाता है, वैसे ही परमेश्वर हमें इस्तेमाल करने से पहले साफ़ करते हैं। जैसे जैतून को कुचला और दबाया जाता है, वैसे ही परमेश्वर ऐसी परिस्थितियां आने दे सकते हैं जो हमें तोड़ें, खींचें और बेहतर बनाएं। और जैसे निकाला हुआ रस तब तक अंधेरे में रहता है जब तक तेल ऊपर नहीं आ जाता, वैसे ही परमेश्वर कभी-कभी हमें अंधेरी परिस्थितियों से गुज़रने देते हैं – जब तक हमारे अंदर पवित्र आत्मा का अभिषेक नहीं हो जाता।

लेकिन याद रखें – अंधेरा कभी स्थायी नहीं होता। आखिर में, जो निकलता है वह कुछ शुद्ध और शक्तिशाली होता है। जैसे जैतून का तेल ऊपर आता है, वैसे ही मसीह की सामर्थ हमारे अंदर बढ़ेगी। हम उनकी खुशबू ले जाने लगेंगे। हम जीवन की नदी की तरह बहेंगे। हम परमेश्वर के हाथों में बहुत कीमती बर्तन बन जाएंगे। तो यह याद रखें: तनाव आपको दबाने के लिए नहीं है। यह आपको बनाने के लिए है। सिर्फ़ आपको बनाने के लिए नहीं — बल्कि इस्तेमाल किए जाने के लिए तैयार करने के लिए। जल्द ही फिर मिलते हैं।

Revival IGNITERS

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार
Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार
THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार
Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

थके हुए

सीसरा, बराक

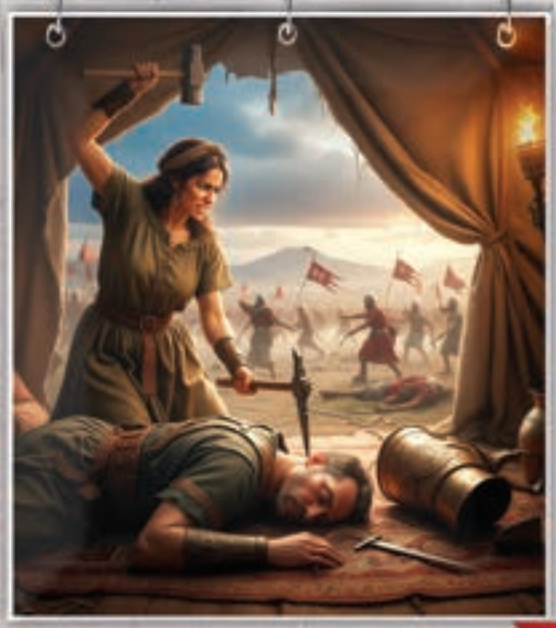

बराक अपने 10,000 योद्धाओं को ताबोर पर्वत से नीचे ले गया और सीसरा की सेना पर ज़ोरदार हमला किया। लड़ाई निर्णायक हो गई। सीसरा अपना रथ छोड़कर पैदल भाग गया, जबकि बाराक ने हारोशेत तक उसकी पूरी सेना का पीछा किया और उसे खत्म कर दिया। एक भी सैनिक नहीं बचा।

फिर भी सीसरा खुद बच निकला और याएल के डेरे के अंदर छिप गया। थककर वह गहरी नींद में सो गया। उस कमज़ोर पल में, याएल ने उसकी कनपटी में डेरे की खूंटी ठोक दिया, और सीसरा मर गया (न्यायियों 4)।

थकान ने उसकी जान ले ली।

एलिय्याह

एलिय्याह — वह नबी जिसने कर्मेल पर्वत पर देशों को हिला दिया था — उसने स्वर्ग से आग बरसाई और झूठे नबियों को चुप करा दिया। फिर भी जब रानी इज़ेबेल ने उसे जान से मारने की धमकी दी, तो वह डर गया।
वह अपनी जान बचाने के लिए भागा। जंगल में, एक झाऊ के पेड़ के नीचे, वह बैठ गया और मरने के लिए प्रार्थना की: "बस, प्रभु। मेरी जान ले लो।" फिर वह लेट गया और सो गया — भावनात्मक रूप से खाली और आध्यात्मिक रूप से टूटा हुआ। लेकिन परमेश्वर के पास अभी भी उसके लिए काम था। अभी भी राजाओं को चुनना बाकी था — अराम पर हज़ाएल, इज़राइल पर येहू। अभी भी एक मिशन बाकी था।

उसे डांटने के बजाय, परमेश्वर ने उसे पुनःस्थापित किया। उसने उसकी थकान दूर की और उसे याद दिलाया: "यह सफ़र तुम्हारे लिए बहुत लंबा है।" परमेश्वर के अलौकिक अनुग्रह से मज़बूत होकर, एलियाह फिर से खड़ा हुआ (1 राजा 19:1–16)।

हिम्मत न हारने वाले

कालेब

जब मूसा ने कनान में बारह जासूस भेजे, तो कालेब उनमें से एक था।

दस डरे हुए लौटे, और कहा, "वहाँ के लोग बहुत बड़े हैं।" लेकिन कालेब — यहोशु के साथ — बिना डरे खड़ा रहा। "ज़मीन अच्छी है। परमेश्वर की मदद से, हम इसे ले सकते हैं।" अपने पक्के विश्वास की वजह से, कालेब चालीस साल बाद वादा किए गए देश में दाखिल हुआ।

85 साल की उम्र में, जब ज़मीन का बँटवारा हो रहा था, तो कालेब ने आराम नहीं माँगा। उसने आसानी की गुज़ारिश नहीं की। उसने हेब्रोन माँगा — सबसे मुश्किल पहाड़ी इलाका, जहाँ दानव के से लोग रहते थे।

पचासी साल की उम्र में, उसने हिम्मत से घोषणा किया:

"मैं आज भी उतना ही ताकतवर हूँ जितना चालीस साल की उम्र में था। मुझे यह पहाड़ दे दो!" और उसने इसे जीत लिया।

उम्र ने उसके विश्वास को कमज़ोर नहीं किया। समय ने उसकी आग को कम नहीं किया। उसने पूरे हृदय से परमेश्वर का अनुसरण किया (गिनती 13–14)।

पौलुस

प्रेरित पौलुस एक आध्यात्मिक शक्ति-केंद्र थे। मसीह से मिलने के बाद, वे सुसमाचार फैलाने में अदम्य हो गए। उन्होंने कई देशों की यात्रा की, पूरे एशिया माइनर और यूरोप में कई कलिसिया बनाया, ऐसे पत्र लिखे जो अब नए नियम की तेरह से ज़्यादा किताबें हैं, और बहुत ज़्यादा सताओ सहे — सब कुछ मसीह के लिए। जहाज़ टूटना। जेल जाना। मारपीट। विरोध। फिर भी वे आगे बढ़ते रहे।

पौलुस ने अपना गुज़ारा करने के लिए टेंट बनाने का काम भी किया, इसे कभी बोझ नहीं समझा, बल्कि अपने मिशन को जारी रखने के लिए एक मंच के तौर पर देखा। वे प्रार्थना में लगातार बने रहे, हिम्मत बढ़ाने में जोशीले रहे, और सेवा में बिना रुके काम करते रहे। वे धीमे नहीं पड़े। वे शांत नहीं हुए। उन्होंने हार नहीं मानी।

बन्दिग्रहों की स्वर्गदूत

बन्दिग्रहों में कैद महिलाओं और बच्चों की ज़िंदगी बदलने के लिए वह एक मशहूर हस्ती बन गईं। उन्होंने कैदियों की पढ़ाई के लिए लड़ाई लड़ी, उनकी व्यक्तिगत स्वच्छता की हालत सुधारी, और महिला वॉर्डन अपॉइंट करने में भी अहम रोल निभाया। इतिहास उन्हें एक दमदार टाइटल से याद करता है — "बन्दिग्रहों की स्वर्गदूत।"

तो, यह असाधारण महिला कौन थीं?

एलिजाबेथ फ्राई का जन्म इंग्लैंड के एक अमीर परिवार में हुआ था। अपने युवावस्था में, उन्होंने यीशु मसीह को ग्रहण किया और अपनी ज़िंदगी उन्हें समर्पित कर दी। उन्होंने नॉर्विच में अपनी मिनिस्ट्री शुरू की, गरीबों और ज़रूरतमंदों तक पहुंचीं, उन्हें बाइबिल सिखाया, और गरीब बच्चों के लिए संडे स्कूल शुरू किए।

शादी के बाद, वह एसेक्स(Essex) चली गईं, जहाँ उन्होंने बीमारों की देखभाल की और हिम्मत से सुसमाचार प्रचार किया। लेकिन जल्द ही, उनके काम ने एक बड़ा मोड़ लिया।

19वीं सदी की शुरुआत में, उन्हें न्यूगेट(Newgate) जेल के अंदर के डरावने हालातों के बारे में पता चला। सौ से ज़्यादा औरतों को बिना सफ़ाई के छोटी-छोटी कोठरियों में ठूंस दिया गया था, वे बहुत ज़्यादा ठंड में ठिठुर रही थीं, गंदगी और निराशा में जी रही थीं। किसी को परवाह नहीं थी। समाज ने उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया था। लेकिन एलिज़ाबेथ ने नज़रें फेरने से मना कर दिया।

वह शहर के अधिकारियों से मिलीं, अपनी आवाज़ उठाई और बदलाव की मांग की। धीरे-धीरे, उनकी कोशिशें रंग लाने लगीं। जेल के हालात सुधरने लगे। रोज़ सुबह और शाम की प्रार्थना शुरू की गई। बाइबल पढ़ना उनके दिनचर्या का हिस्सा बन गया। औरतों को सिलाई का हुनर सिखाया गया।

कुछ ज़बरदस्त हुआ। जो औरतें कभी निराशा में जी रही थीं, उन्हें अब इज़्ज़त मिलने लगी। सिलाई करके, उन्होंने आमदनी कमाई। अनुशासन से, उन्होंने फिर से अपना आत्म-सम्मान पाया। परमेश्वर के वचन से, उन्हें मकसद मिला।

उन दिनों एक और कड़वी सच्चाई थी। लंदन से कैदियों को जहाज़ से ऑस्ट्रेलिया ले जाया जाता था। लंबी समुद्री यात्राओं के दौरान, महिला कैदियों को जंजीरों में बांधकर रखा जाता था, उन्हें चिकित्सा देखभाल नहीं मिलता था, और आने के बाद भी, वे गुलामों की तरह रहती थीं। जब एलिज़ाबेथ ने यह सुना, तो उसने सीधे सरकारी अधिकारियों से अपील की। उसके पक्के इरादे की वजह से, ये ज़ुल्म धीरे-धीरे कम हो गए।

न्यूगेट में जो शुरू हुआ, उसने जल्द ही पूरे देश में बन्दिग्रह सुधार आन्दोलनों पर असर डाला। हर बार जब जेल के जहाज़ इंग्लैंड से निकलते, तो एलिज़ाबेथ स्वयं डॉक पर जाती थीं। वह हर कैदी को एक बाइबल, साथ ही गर्म कपड़े बुनने के लिए धागा और सुई तोहफ़े में देती थीं। उन्होंने उन्हें सिर्फ़ विदा नहीं किया — उन्होंने उन्हें उम्मीद के साथ भेजा।

और यह कोई अल्पकालिक परियोजना नहीं था। उन्होंने 25 साल तक ईमानदारी से सेवा की। जब वह पहली बार 1813 में न्यूगेट गईं, तो महिला कैदियों और उनके बच्चों की तकलीफ़ देखकर उनका हृदय टूट गया।

उन्होंने उन्हें कपड़े और खाना दिया। उन्होंने बन्दिग्रहों के अंदर एक चैपल बनवाया और उनके बच्चों के लिए एक स्कूल भी शुरू किया। उन्होंने उन्हें सिलाई और बुनाई की ट्रेनिंग दी ताकि वे सम्मान से अपना गुज़ारा कर सकें। सबसे बढ़कर, उन्होंने उन्हें परमेश्वर के वचन की जीवन बदलने वाली सच्चाईयाँ सिखाईं।

कई कैदी, उनके दिखाए मसीह के प्रेम से प्रभावित हुए, पश्चाताप किया और परमेश्वर की ओर लौट आए। एक सर्दी में, बर्फ़ में एक बेघर लड़के की लाश देखकर वह बहुत दुखी हुईं। उन्होंने बेघर लोगों के रात में सुरक्षित रहने के लिए आश्रय बनवाए। उनकी हमदर्दी ने क्वीन विक्टोरिया का भी ध्यान खींचा, जिन्होंने बहुत दान देकर उनके काम में मदद की।

बंदीगृह सुधार के जो सिद्धांत उन्होंने शुरू किए, उन्हें बाद में पूरे यूरोप में अपनाया गया। उनके जीवन ने भविष्य के मिशनरियों को न सिर्फ़ सुसमाचार का प्रचार करने बल्कि सार्थक सामाजिक सेवा करने के लिए भी प्रेरित किया।

ऐसे समय में जब समाज महिलाओं को हिम्मत से आगे बढ़ने से रोकता था, एलिज़ाबेथ फ्राई मज़बूती से खड़ी रहीं। उन्हें इतनी हिम्मत किसने दी? प्रभु के लिए उनका बेहिसाब प्रेम और सही मायने में सेवा करने का उनका पक्का इरादा।

प्रिय नौजवानों! यह इस बारे में नहीं है कि आप कौन सी मिनिस्ट्री करते हैं — यह इस बारे में है कि आप आत्माओं को कैसे जीतते हैं। जैसे एलिज़ाबेथ फ्राई ने बंदीगृह सेवकाई के माध्यम से अनगिनत आत्माओं तक पहुँचीं, वैसे ही आइए हम भी सलाखों के पीछे भूली हुई आत्माओं तक पहुँचने के लिए स्वयं को तैयार करें। क्योंकि जागृति हमेशा कलीसियाओं में शुरू नहीं होती। कभी-कभी, यह बन्दिग्रहों में शुरू होती है।

प्रार्थना मार्गदर्शिका

आओ, प्रार्थना करें।

मार्च 2026

इस मार्च में, तमिलनाडु एक ज़रूरी शैक्षिक पड़ाव पर है। लगभग 8.7 **लाख छात्र** 2 मार्च से शुरू होने वाली 12वीं क्लास की पब्लिक परीक्षा देंगे, और दूसरे 8.7 **लाख छात्र** 11 मार्च से अपनी 10वीं क्लास की परीक्षा देंगे। कुल मिलाकर, **16 लाख** से ज़्यादा **युवा दिमाग** सपने, उम्मीदें और तनाव लेकर परीक्षा हॉल में कदम रखेंगे। आइए हम प्रार्थना करें कि हर एक छात्र अपनी परीक्षा साफ़, आत्मविश्वास और शांति से दे — और उन्हें अपनी कड़ी मेहनत के हिसाब से बेहतरीन परिणाम मिलें।

युद्ध से जूझ रहे देशों में शांति के लिए प्रार्थना करें

युद्ध देशों पर गहरे निशान छोड़ता रहता है। सैनिकों और बेगुनाह आम लोगों ने अपनी जान गंवाई है। परिवार बेघर हो गए हैं। चल रहे संघर्ष के कारण कई लोग खाना और नौकरी जैसी बुनियादी ज़रूरतें भी नहीं पा पा रहे हैं।

रूस और यूक्रेन के बीच 24 फरवरी, 2023 को शुरू हुआ युद्ध अब तीन साल से ज़्यादा हो गया है। लगातार इलाकों में लड़ाई और सीज़फ़ायर बातचीत में कोई बड़ी कामयाबी न मिलने से, हज़ारों जानें जा चुकी हैं, जिनमें हज़ारों सैनिक भी शामिल हैं। रिपोर्ट्स बताती हैं कि अकेले पिछले साल ही रूसी सेना में लगभग 4.5 लाख नए सैनिक शामिल हुए, और अभी लगभग 7 लाख सैनिक इस लड़ाई में लगे हुए हैं। आइए हम इस लड़ाई के तुरंत खत्म होने के लिए हृदय से प्रार्थना करें। नेताओं में समझदारी, आम लोगों की सुरक्षा और प्रभावित देशों की बहाली के लिए प्रार्थना करें।

छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करें

2021 से दिसंबर 2025 तक, लगभग 65 **छात्रों** ने दुखद रूप से अपनी जान ले ली है। यह चिंताजनक परिमान बहुत ज़्यादा पढ़ाई और इमोशनल दबाव को दिखाता है। IIT जैसे जाने-माने इंस्टीट्यूशन में भी स्टूडेंट्स तेज़ी से मेंटल स्ट्रेस से जूझ रहे हैं, जिसके दिल तोड़ने वाले नतीजे हो रहे हैं।

आइए हम भावनात्मक मज़बूती, सहायक माहौल और समय पर दखल के लिए प्रार्थना करें। उम्मीद निराशा की जगह ले, और हर छात्र की ज़िंदगी में ताकत दबाव को हरा दे।

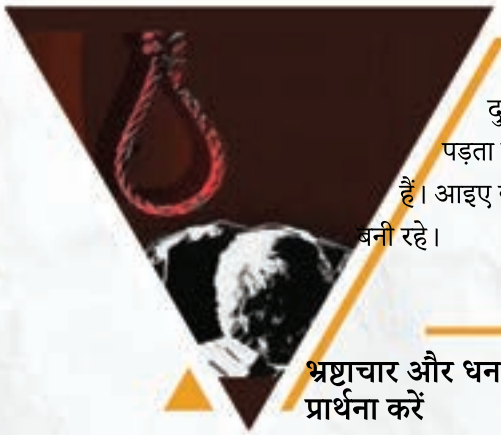

सताए गए मसीहियों के लिए प्रार्थना करें

दुनिया भर में, **हर दिन औसतन 13 मसीहियों को उत्पीड़न का सामना करना** पड़ता है। **हर साल लगभग 4,848 मानने वाले** अपने विश्वास के लिए विरोध सहते हैं। आइए हम सुरक्षा, हिम्मत और न्याय के लिए प्रार्थना करें। हमले बंद हों, और शांति बनी रहे।

भ्रष्टाचार और धन सम्बन्धी अपराधों के खिलाफ प्रार्थना करें

भारत में, महाराष्ट्र से भ्रष्टाचार के मामलों का एक महत्वपूर्ण प्रतिशत रिपोर्ट किया गया है, जो बैंकिंग धोखाधड़ी के मामलों में भी सबसे आगे है। महाराष्ट्र के बाद, दिल्ली और तेलंगाना जैसे राज्यों को भी ऐसी ही चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आइए हम शासन में ईमानदारी, वित्तीय प्रणालियाँ में पारदर्शिता और पूरे देश में धर्मी नेतृत्व के लिए प्रार्थना करें।

सुरक्षा बलों की सलामती के लिए प्रार्थना करें

हाल ही में सुरक्षा बल और नक्सली ग्रुप के बीच हुई मुठभेड़ों में लोग मारे गए हैं। आइए हम अपने हथियारबंद लोगों की सुरक्षा, संचालन में समझदारी और संघर्ष वाले इलाकों में स्थिरता के लिए प्रार्थना करें।

आने वाले तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के लिए प्रार्थना करें

आने वाले तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में **6.36 करोड़** से ज़्यादा **मतदाताओं** के हिस्सा लेने की उम्मीद है, यह एक अहम पल है। आइए हम प्रार्थना करें कि मतदाता झूठे वादों से गुमराह न हों, बल्कि बुद्धि और विवेक वाले नेताओं को चुनें। प्रार्थना करें कि चुनाव आयोग निष्पक्षता, तटस्थता और पारदर्शिता के साथ काम करे।

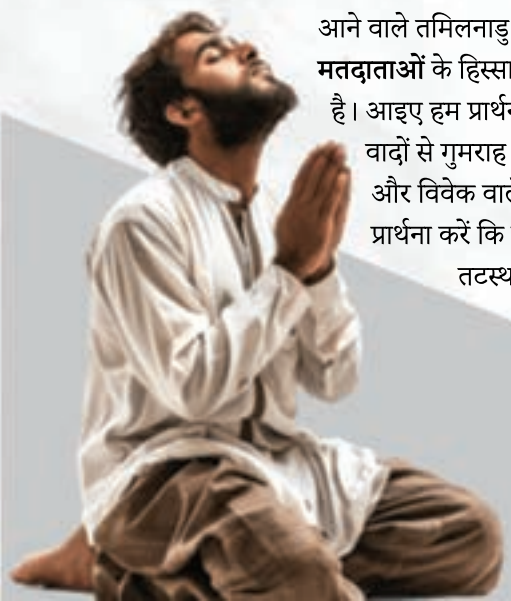

Soul Detox सोशल मीडिया रीसेट का समय

हेलो मित्रों! "सोल डिटॉक्स" के माध्यम से आपसे फिर जुड़ना मेरे लिए बहुत आनंद की बात है। इस महीने हम एक ऐसे विषय पर बात करेंगे जो चुपचाप हमारी आत्मा, शरीर और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। आइए सोचें — कैसे हम अपनी आत्मा को उस चीज़ से डिटॉक्स कर सकते हैं जिसने धीरे-धीरे हमारा समय, ध्यान और शांति छीन ली है। हाँ — हम बात कर रहे हैं सोशल मीडिया डिटॉक्स की।

ज़रा ईमानदारी से सोचिए...

1. क्या सुबह उठते ही आपका पहला विचार यह होता है —
"क्या अपडेट चूक गए? किसका मैसेज आया? कोई नया अधिसूचना?"
और आप तुरंत अपना फोन उठा लेते हैं?
2. क्या आप देर रात तक रील्स और शॉर्ट्स देखते हुए स्क्रॉल करते रहते हैं?
3. क्या आप हर कुछ मिनट में अपना फोन चेक करते हैं — सिर्फ इस उम्मीद में कि कोई मैसेज या अधिसूचना आया हो?

अगर आप इनमें से एक भी काम नियमित रूप से कर रहे हैं...तो आप शायद संकट क्षेत्र में हैं।

आपको केवल बेहतर समय प्रबंधन ।की जरूरत नहीं है। आपको मोबाइल की लत से डिटॉक्स की जरूरत है।

अनदेखा नुकसान

1. अत्यधिक स्क्रीन टाइम आपकी प्राकृतिक नींद की प्रक्रिया को बिगाड़ देता है।
2. जब आप सो रहे होते हैं, तब भी आपका दिमाग अत्यधिक उत्तेजित रहता है — जिससे मानसिक दबाव, ध्यान की कमी, याददाश्त में कमजोरी और भावनात्मक थकान होती है। देखते ही देखते पूरा दिन व्यर्थ सा लगने लगता है।
3. अनावश्यक प्रभावों से जुड़ना हमें प्रलोभनों की ओर खींच सकता है और सूक्ष्म आत्मिक संघर्षों में फंसा सकता है। इससे तनाव और चिंता बढ़ती है — जिसे आज हम फोमो- पीछे रह जाने का डर(FOMO - Fear of Missing Out) कहते हैं।
4. लगातार स्क्रॉल करना तुलना की भावना को बढ़ाता है। हम अपनी जिंदगी को दूसरों की "हाइलाइट रील" से तुलना करने लगते हैं — और तुलना चुपचाप संतोष को चुरा लेती है।
5. स्नेपचैट(Snapchat) की स्ट्रीक्स बनाए रखना गर्व की बात बन गया है — लेकिन किस कीमत पर?

डिटॉक्स के लाभ

- चिकित्सकीय रूप से, कम स्क्रीन टाइम चिंता और तनाव को कम करता है।
- अधिक स्पष्टता और ध्यान — बेहतर निर्णय लेने की क्षमता।
- स्वस्थ आत्म-सम्मान — कम तुलना से आत्म-मूल्य मजबूत होता है।
- बेहतर नींद और अधिक ऊर्जावान सुबह।
- सोने से पहले स्क्रीन टाइम कम करने से मनोदशा और नींद की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- डोपामिन के अत्यधिक उतार-चढ़ाव में कमी — जिससे भावनाएँ स्थिर रहती हैं और मूड स्विंग्स (मन का एकदम उदास हो जाना) कम होते हैं।

- वास्तविक जीवन के रिश्ते मजबूत होते हैं — प्रत्यक्ष (ऑफ लाइन) उपस्थिति सच्चे संबंध बनाती है।
- और सबसे महत्वपूर्ण — आप परमेश्वर की आवाज़ को और स्पष्ट रूप से सुन पाते हैं। "परमेश्वर के निकट आओ, तो वह तुम्हारे निकट आएगा।" (याकूब 4:8)

जब हम जानबूझकर पीछे हटते हैं, तब हमें अपने जीवन की कई समस्याओं के समाधान और दिशा मिलती है।

सोशल मीडिया डिटॉक्स कैसे करें

लूका 5:16 में लिखा है — "परन्तु यीशु सुनसान स्थानों में जाकर प्रार्थना किया करते थे।" डिटॉक्स का अर्थ है — संसार से कुछ समय के लिए अलग होना, ताकि परमेश्वर से दोबारा जुड़ सकें। आप ऐसे शुरुआत कर सकते हैं:

1. एक सप्ताह या एक महीने के लिए स्नेपचैट(Snapchat),इन्स्टाग्राम(Instagram), फेसबुक (Facebook) या व्हात्सएप(WhatsApp) जैसे ऐप्स अनइंस्टॉल कर दें।

या उपयोग को 35–45 मिनट प्रतिदिन तक सीमित करें।

2. स्क्रॉलिंग के समय को बाइबल पढ़ने, प्रार्थना, भक्ति गीत, आध्यात्मिक पुस्तकों या आराधना में लगाएँ।

3. अपने माता-पिता के साथ जानबूझकर समय बिताएँ। उनसे पूछें कि वे कैसे हैं। उनकी मदद करें।

ये छोटी बातचीत उन्हें खुशी देती है — और आपको शांति।

4. सोने से एक घंटा पहले अपने फोन को "बेडटाइम"(Bedtime Mode) पर रखें और उसे दूसरे कमरे में छोड़ दें।

5. चलने, दौड़ने या शारीरिक व्यायाम में समय निवेश करें।

6. रोज़ अपने स्क्रीन टाइम "Screen Time" (Settings - Digital Wellbeing) को देखें। स्वयं को चुनौती दें: "कल मैं आज से कम उपयोग करूँगा।"

छोटे कदम मजबूत अनुशासन की ओर ले जाते हैं।

यीशु छुड़ाता है सेवकाई

दिल्ली में...

युवा बेदारी शिविर

2026 अप्रैल 13,14,15

डॉ. अन्बुराजन

भाई सैम जेबराज

भाई अविनाश

स्थान: डॉन बॉस्को रिसोर्स सेंटर
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली

आमंत्रित:
भाई मोहन सी. लाज़रुस

अब समय है चिंगारी को प्रज्वलित करने का।
उठो और जागो! एक नई पीढ़ी, एक नई अग्नि,
तुम्हारा जीवन परिवर्तन का क्षण यहीं से आरंभ होता है।

संपर्क करें: +91 72176 63240,
+91 99991 74615

पंजीकरण
शुल्क: ₹ 300/-

पंजीकरण के लिए
यहां स्कैन करें

समाचार

दिल्ली में 800 से ज़्यादा लोग लापता: राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) ने नोटिस जारी किया

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) ने उन रिपोर्ट्स पर स्वयं से संज्ञान लिया है जिनमें कहा गया है कि पिछले महीने दिल्ली में 800 से ज़्यादा लोग लापता हो गए थे। मीडिया कवरेज पर कार्रवाई करते हुए, कमीशन ने एक केस दर्ज किया है और दिल्ली सरकार को दो हफ़्ते के अंदर एक विस्तृत रिपोर्ट देने का निर्देश दिया है।

रिपोर्टों के मुताबिक, अकेले जनवरी के पहले दो हफ़्तों में 807 लोगों को लापता घोषित किया गया, जिससे बहुत चिंता हुई। इनमें से 191 नाबालिग और 616 बड़े हैं। कमीशन ने कहा कि पुलिस ने अब तक 235 लोगों का पता लगाया है, जबकि 572 लोग अभी भी लापता हैं।

NHRC ने देखा है कि अगर मीडिया रिपोर्ट्स का विषय वस्तु सही है, तो वे संभावित मानव अधिकार उल्लंघन के बारे में गंभीर चिंताएं पैदा करती हैं। इसलिए उसने दिल्ली के चीफ सेक्रेटरी और पुलिस कमिश्नर को दो हफ़्ते के अंदर मामले पर एक पूरी रिपोर्ट देने का निर्देश दिया है। इसके अलावा, 5 फरवरी की एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, 2025 के दौरान दिल्ली में कुल 24,508 गुमशुदगी की शिकायतें दर्ज की गईं। गुमशुदा लोगों में से लगभग 60% महिलाएं थीं। पुलिस ने 15,421 लोगों को ढूंढ लिया है, जबकि 9,087 मामले अभी भी अनसुलझे हैं।

इस स्थिति ने लोगों की चिंता बढ़ा दी है और राजधानी में गुमशुदा लोगों के मामलों को सुलझाने की ज़रूरत पर देश का ध्यान खींचा है।

Owned & Published by: Brother Mohan C. Lazarus from Jesus Redeems, Nalumavadi 628 211 &
Printed by: Mrs. Joyce Lazarus at Angel Press, 13/82 A, Lakhsmipuram, Nalumavadi - 628 211

महिला दिवस (विमेंस डे)

सामर्थ, सरगर्मी और संभावनाओं का जश्न

आज, महिलाएँ सिर्फ़ दुनिया में भाग नहीं ले रही हैं — वे इसे नई पहचान दे रही हैं। हर उस क्षेत्र में जिसकी कल्पना की जा सकती है, महिलाएँ बाधाएँ तोड़ रही हैं, नए स्तर कायम कर रही हैं, और ऐसी विरासत बना रही हैं जो पीढ़ियों को प्रेरित करती है। अग्निणी ग्लोबल कॉर्पोरेशन से लेकर स्पोर्ट्स एरीना में दबदबा बनाने तक, वैज्ञानिक नई खोज(साइंटिफिक इनोवेशन) में आगे रहने से लेकर नए साहसिक नए उद्यम शुरू करने तक — महिलाएँ साबित कर रही हैं कि महत्वाकांक्षा का कोई जाति विभाग नहीं होता। जो महिलाएँ हिम्मत, साहस और पक्के इरादे से आगे बढ़ीं, उनकी कहानियाँ सिर्फ़ उपलब्धि से कहीं ज़्यादा हैं — वे प्रेरणा की चिंगारी हैं।

आइए कुछ असाधारण पथप्रदर्शकों का जश्न मनाएँ:

मलाला यूसुफ़ज़ई – वह आवाज़ जिसने चुप रहने से इनकार कर दिया

सिर्फ़ 11 साल की उम्र में, मलाला ने तालिबान राज में लड़कियों की शिक्षा के लिए आवाज़ उठाने की हिम्मत की, BBC उर्दू के लिए गुल मकाई नाम से गुमनाम रूप से लिखा। सिर्फ़ लड़कियों को स्कूल भेजने की चाहत में एक बेरहमी से हत्या की कोशिश से बचने के बाद भी, उन्होंने पीछे हटने से मना कर दिया। आज, मलाला फंड के ज़रिए, वह दुनिया भर में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा दे रही हैं। एक पाकिस्तानी शिक्षा कार्यकर्ता और इतिहास में सबसे कम उम्र की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता, मलाला हिम्मत और भरोसे की एक निडर निशानी हैं।

मिताली राज – भारतीय क्रिकेट की रानी

मिताली राज सिर्फ़ एक क्रिकेटर नहीं हैं – वह एक लेजेंड हैं। वह महिलाओं के अंतरराष्ट्रीय एकदिवसीय मैचों में 10,868 रन पार करने वाली पहली महिला बनीं। उनके नाम लगातार सात हाफ-सेंचुरी का रिकॉर्ड है और वह एकमात्र कप्तान हैं – पुरुष या महिला– जिसने भारत को दो ICC वर्ल्ड कप फाइनल में पहुँचाया।वह T20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 2000 से ज़्यादा रन बनाने वाली पहली भारतीय महिला भी थीं। अर्जुन अवॉर्ड (2003) और पद्म श्री (2015) से सम्मानित, मिताली के 23 साल के इंटरनेशनल करियर ने भारत में महिला क्रिकेट को नई पहचान दी और एक ऐसा स्तर हासिल किया जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगा।

डॉ. टेसी थॉमस – भारत की "मिसाइल वुमन"

डॉ. टेसी थॉमस ने भारत में एक मिसाइल परियोजना का नेतृत्व करने वाली पहली महिला वैज्ञानिक बनकर इतिहास रच दिया। "भारत की मिसाइल वुमन" के नाम से मशहूर, उन्होंने अग्नि मिसाइल प्रोग्राम के प्रोजेक्ट डायरेक्टर के तौर पर अहम भूमिका निभाई और DRDO के ज़रिए भारत की डिफेंस में तरक्की में अहम भूमिका निभाई।

उनका सफ़र शक्तिशाली अनुस्मारक है इस बात का की साइंस, लीडरशिप और इनोवेशन का कोई जाति विभाग नहीं होता।

डॉ. प्रिया रामचंद्रन – युवा ज़िंदगीयों के लिए उम्मीद की किरण

15 से ज़्यादा सालों से, डॉ. प्रिया रामचंद्रन कैंसर से जूझ रहे ज़रूरतमंद बच्चों के लिए उम्मीद की किरण रही हैं। रे ऑफ़ लाइट फ़ाउंडेशन के ज़रिए, उन्होंने 140 से ज़्यादा बच्चों का मुफ़्त इलाज किया है।

चेन्नई मेडिकल कॉलेज से मेडिकल ग्रेजुएट और UK में प्रशिक्षित सर्जिकल स्पेशलिस्ट, वह एक डॉक्टर के तौर पर अपनी भूमिका से कहीं आगे जाती हैं। जब एक इलाज में 10 लाख रुपये तक का खर्च आ सकता है, तो वह आराम के बजाय दया चुनती हैं, बच्चों को सिर्फ़ इलाज ही नहीं देतीं — बल्कि ज़िंदगी का दूसरा मौका भी देती हैं। एक डॉक्टर और इंसानियत की मिसाल होने के नाते, वह हर जगह महिलाओं के लिए एक प्रेरणा हैं।

झारखंड युवा जागृति सम्मलेन – 2026

निरंजन बेक

तारीख: 18 अप्रैल 2026

गाँव: अद्रास नगर, जुरिया,
बी.एस. के पास कॉलेज,
P.O: लोहरदगा,
जिला: लोहरदगा – 835302, झारखंड

7765913937 / 9962085523

पास्टर सुवेंदु परिदा

तारीख: 19 अप्रैल 2026

प्रार्थना भवन, चुराहा, पनकी,
HP गैस गोदाम के पास,
पनकी, पलामू – 822122, झारखंड

9955176905 / 9962085523

पास्टर प्रकाश होरो

तारीख: 20 अप्रैल 2026

गाँव: दोवरी, P.O: कर्रा, जिला: खूंटी,
झारखंड

9661825081 / 9962085523

भाई जॉर्ज कुजूर

तारीख: 21 अप्रैल 2026

C/o विशाल खलखो, सरना टोली,
कडरू, सड़क नंबर. 1,
रांची – 834002, झारखंड

7765913937 / 9962085523

मुख्य वक्ता:

भाई सैम जेबराज
डॉ. अंबू राजन